प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा ग्राम चरनपुर में दो–दवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पंतनगर। 31 अगस्त 2025। गदरपुर ब्लॉक के चरनपुर गाँव में जनजातीय महिलाओं को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने हेतु गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि संचार विभाग के तत्वावधान में और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वित्तीय सहयोग से 'मूल्य संवर्धन से जनजातीय महिलाओं का उद्यमिता विकास' विषय पर दो–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर निदेशक संचार डा. जे.पी. जायसवाल, आईएसडी की संचालक श्रीमती विन्द्यवासिनी, श्रीमती निशा तथा परियोजना अन्वेषक एवं सहायक प्राध्यापिका, कृषि संचार विभाग डा. अर्पिता शर्मा कांडपाल उपस्थित रहीं। डा. जे. पी. जायसवाल ने कहा कि पारंपरिक फसलों का मूल्य संवर्धन केवल घर की जरूरतों को पूरा करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह महिलाओं को स्वरोजगार का सुनहरा अवसर भी प्रदान करता है। यदि ग्रामीण महिलाएँ मंडुआ, झंगोरा और अन्य स्थानीय अनाजों का प्रयोग करके विविध उत्पाद तैयार करें तो उनकी आमदनी कई गुना बढ़ सकती है। यह न केवल महिलाओं की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेगा, बल्कि पूरे गाँव की अर्थव्यवस्था में भी नई ऊर्जा का संचार करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि गाँव की महिलाएँ ही असली परिवर्तन की धुरी हैं। अगर वे आगे बढ़ेंगी तो आने वाली पीढ़ियाँ भी आत्मनिर्भर बनेंगी और गाँवों का चेहरा बदलेगा। डा. अर्पिता शर्मा कांडपाल ने कहा कि इस प्रशिक्षण का उद्देश्य तकनीक के साथ–साथ उद्यमशीलता की भावना जगाना है। मंडुआ से तैयार उत्पाद जैसे बिस्कुट, लापसी और केक न केवल पौष्टिक हैं बल्कि बाजार में उनकी बड़ी मांग है। यदि महिलाएँ समूह बनाकर इनका उत्पादन करें तो वे स्वरोजगार से 'रोजगार प्रदाता' बन सकती हैं। श्रीमती विन्द्यवासिनी ने कहा कि गाँव की प्रगति तभी संभव है जब महिलाएँ आर्थिक रूप से मज़बूत हों। प्रशिक्षण से न केवल आत्मविश्वास बढ़ता है बल्कि गाँव की महिलाएँ आत्मनिर्भरता की मिसाल भी बन सकती हैं। श्रीमती निशा ने महिलाओं को व्यवहारिक प्रशिक्षण देते हुए मठरी, पापड़ और सेवई बनाने की विधियाँ सिखाईं। उन्होंने बताया कि छोटे स्तर पर तैयार उत्पाद भी यदि गुणवत्ता और स्वच्छता के साथ बनाए जाएँ तो उनकी बिक्री आसानी से हो सकती है। महिलाएँ चाहे तो इन्हें स्थानीय हाट–बाज़ार और मेलों में बेचकर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकती हैं।

प्रशिक्षण में महिलाओं को मंडुआ बिस्कुट, लापसी, नमकीन और केक बनाने की तकनीक सिखाई गई। साथ ही विपणन, पैकेजिंग और आय वृद्धि की रणनीतियों पर विस्तार से जानकारी दी गई। प्रशिक्षण उपरांत महिलाओं को स्वरोजगार शुरू करने के लिए आवश्यक कच्चा माल और उपकरण भी वितरित किए गए। कार्यक्रम में गाँव की बड़ी संख्या में महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और कहा कि इस पहल से उन्हें घर–परिवार के साथ–साथ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिलेगा। कार्यक्रम में श्रीमती उमा और श्रीमती रश्मि भी उपस्थिति थी।